जयपुर

:: अनुक्रमणिका ::

पृष्ठ-संख्या

प्रकाशकीय
सम्पादकीय

प्रथम खण्ड

जीवन, व्यक्तित्व और विचार (१ से ३८)

१. भगवान् महावीर : जीवन, व्यक्तित्व और विचार	पं० के० भुजबली शास्त्री	१
२. भगवान् महावीर के पांच नाम और उनका प्रतीकार्थ	डा० नेमीचन्द जैन	८
३. तीर्थंकर महावीर	डा० एस० राधाकृष्णन्	१२
४. ज्योतिपुरुष महावीर	उपाध्याय अमर मुनि	१६
५. महावीर : क्रान्तद्रष्टा, युगसृष्टा	आचार्य रजनीश	२२
६. आत्मजयी महावीर	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२६
७. विश्व को भगवान् महावीर की देन	श्री मधुकर मुनिजी	२९
८. भगवान् महावीर के शाश्वत सन्देश	श्री अगरचन्द नाहटा	३२

द्वितीय खण्ड

सामाजिक सन्दर्भ (३९ से ९४)

९. समता-दर्शन : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में	आचार्य श्री नानालालजी म० सा०	३९
१०. भगवान् महावीर की मांगलिक विरासत	पं० सुखलाल संघवी	४८
११. महावीर : बापू के मूल प्रेरणा-स्रोत	डा० भागचन्द जैन	५२
१२. आदर्श परिवार की संकल्पना और महावीर	डा० कुसुमलता जैन	६०
१३. अनैतिकता के निवारण में महावीर-वाणी की भूमिका	डा० कुन्दनलाल जैन	६४
१४. महावीर की दृष्टि में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी	प्रो० कमलकुमार जैन	७१
१५. भगवान् महावीर की दृष्टि में नारी	विमला मेहता	७७
१६. नवीन समाज-रचना में महावीर की विचार-धारा किस प्रकार सहयोगी बन सकती है ?		

(i) जो भी उत्पादन हो उसे सब बाँटकर खायें — श्री विरधीलाल सेठी — ८१
(ii) अध्यात्मवाद के द्वारा मानव जीवन संतुलित किया जा सकता है — डा० जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल — ८६
(iii) परस्पर उपकार करते हुए जीना ही वास्तविक जीवन — श्री मिश्रीलाल जैन — ८८
(iv) नवीन समाज-रचना स्याद्वाद पर आधारित हो — श्री जवाहरलाल मूणोत — ९२

तृतीय खण्ड

आर्थिक संदर्भ (९५ से ११६)

१७. समाजवादी अर्थ-व्यवस्था और महावीर — श्री शान्तिचन्द्र मेहता — ९७
१८. आर्थिक, मानसिक और आध्यात्मिक गरीबी कैसे हटे ? — श्री रणजीतसिंह कूमट — ११०
१९. महावीर-वाणी में श्रम-भाव की प्रतिष्ठा — श्री श्रीचन्द सुराना 'सरस' — ११३

चतुर्थ खण्ड

राजनीतिक संदर्भ (११७ से १४६)

२०. लोक कल्याणकारी राज्य और महावीर की जीवन-दृष्टि — डा० महेन्द्रसागर प्रचंडिया — ११९
२१. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के विकास-क्रम में महावीर के विचार — श्री हरिश्चन्द्र दक — १२३
२२. गुट निरपेक्षता का सिद्धान्त और महावीर का अनेकान्त दृष्टिकोण — डा० सुभाष मिश्र — १२७
२३. विश्व-शांति के संदर्भ में भगवान् महावीर का संदेश — डा० श्रीमती शान्ता भानावत — १३२
२४. वर्तमान नेतृत्व महावीर से क्या सीखे ? — श्री सौभाग्यमल जैन — १३६
२५. महावीर की क्रांति से आज के क्रांतिकारी क्या प्रेरणा लें ? — श्री मिट्ठालाल मुरड़िया — १४२

पंचम खण्ड

दार्शनिक संदर्भ (१४७ से १९२)

२६. भीतर की बीज-शक्ति को विकसित करें ! — आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० — १४९
२७. महावीर की दृष्टि में मानव-

व्यक्तित्व के विकास की सम्भावनाएँ	डा० छविनाथ त्रिपाठी	१५४
२८. महावीर की दृष्टि में स्वतन्त्रता का सही स्वरूप	मुनि श्री नथमल	१६०
२९. व्यक्ति-स्वातन्त्र्य और महावीर	डा० देवेन्द्र कुमार जैन	१६७
३०. महावीर-वाणी : सही दिशा-बोध	डा० प्रेम प्रकाश भट्ट	१६९
३१. आधुनिक दार्शनिक धारणाएं और महावीर	पं० श्रुतिदेव शास्त्री	१७४
३२. अध्यात्मविज्ञान से ही मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा सम्भव	श्री देवकुमार जैन	१७९
३३. अहिंसा के आयाम : महावीर और गाँधी	श्री यशपाल जैन	१८७

षष्ठ खण्ड
वैज्ञानिक संदर्भ (१९३ से २१६)

३४. जैन दर्शन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण	मुनि श्री सुशीलकुमार	१९५
३५. आधुनिक विज्ञान और द्रव्य विषयक जैन धारणाएँ	डा० वीरेन्द्र सिंह	२०३
३६. वैज्ञानिकी और तकनीकी विकास से उत्पन्न मानवीय समस्याएं और महावीर	डा० राममूर्ति त्रिपाठी	२११

सप्तम खण्ड
मनोवैज्ञानिक संदर्भ (२१७ से २५२)

३७. भगवान् महावीर की वे बातें जो आज भी उपयोगी हैं	श्री उमेश मुनि 'अणु'	२१९
३८. मनोविज्ञान के परिवेक्ष्य में भगवान् महावीर का तत्त्वज्ञान	श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	२३१
३९. महावीर ने कहा— सुख यह है, सुख यहाँ है	डा० हुकमचन्द भारिल्ल	२४१
४०. मानसिक स्वास्थ्य के लिए महावीर ने यह कहा	श्री यज्ञदत्त अक्षय	२४५
४१. अवकाश के क्षणों के उपयोग की समस्या और महावीर	श्री महावीर कोटिया	२५०

अष्टम खण्ड
सांस्कृतिक संदर्भ (२५३ से ३१२)

४२. आधुनिक परिस्थितियाँ एवं भगवान् महावीर का सन्देश	डा० महावीर सरन जैन	२५५

४३. आधुनिक युग और भगवान् महावीर	पं० दलसुख मालवणिया	२६८
४४. वर्तमान में भगवान् महावीर के तत्त्व-चिन्तन की सार्थकता	डा० नरेन्द्र भानावत	२७२
४५. बदलते संदर्भों में महावीर-वाणी की भूमिका	डा० प्रेमसुमन जैन	२७७
४६. भगवान् महावीर की प्रासंगिकता	डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	२८३
४७. क्या आज के संदर्भ में भी महावीर सार्थक है ?	श्री भंवरमल सिंघी	२९१
४८. युवा पीढ़ी महावीर से क्या प्रेरणा ले ?	श्री चन्दनमल 'चाँद'	२९५
४९. लोक सांस्कृतिक चेतना और भगवान् महावीर	श्री श्रीचन्द जैन	२९८
५०. भाषाओं का प्रश्न : महावीर का दृष्टिकोण	श्री माईदयाल जैन	३०५

नवम खण्ड

परिचर्चा (३१३ से ३४४)

५१. भगवान् महावीर द्वारा प्रतिष्ठापित मूल्य : कितने प्रेरक !! कितने सार्थक !!

आयोजक	डा० नरेन्द्र भानावत	३१५
विचारक विद्वान्—	आचार्य श्री नानालालजी म० सा०	३१६
	श्री रिषभदास रांका	१८
	श्री गणपतिचन्द्र भण्डारी	३२७
	डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल	३२९
	श्री जयकुमार जलज	३३१
	डा० इन्दरराज बैद	३३२
	डा० चैनसिंह वरला	३३४
	डा० रामगोपाल शर्मा	३३६
	डा० नरेन्द्रकुमार सिंघी	३३८
	डा० नरपतचन्द सिंघवी	३४०

१०. हमारे सहयोगी लेखक (३४५ से ३५०)

•••